अध्याय
01

राष्ट्र निर्माण की चुनौतियां

सीखने का प्रतिफल

इस अध्याय में हम लोग पढ़ेंगे कि 1947 के बाद पहले दशक में राष्ट्र निर्माण मैं देश ने किन किन चुनौतियों का सामना किया था। किस प्रकार इन चुनौतियों का निपटारा किया गया।

भारत 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ। मध्य रात्रि को पंडित जवाहरलाल नेहरू का "भाग्य वधू से चीर प्रतीक्षित" विख्यात भाषण दिया गया था। जिसमें दो बातों पर सहमति बनी थी।

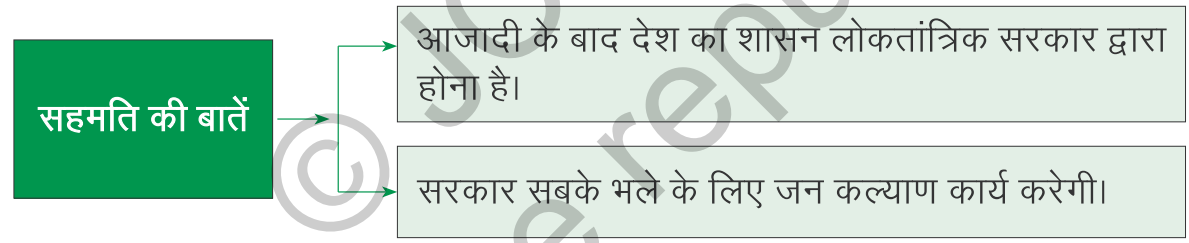

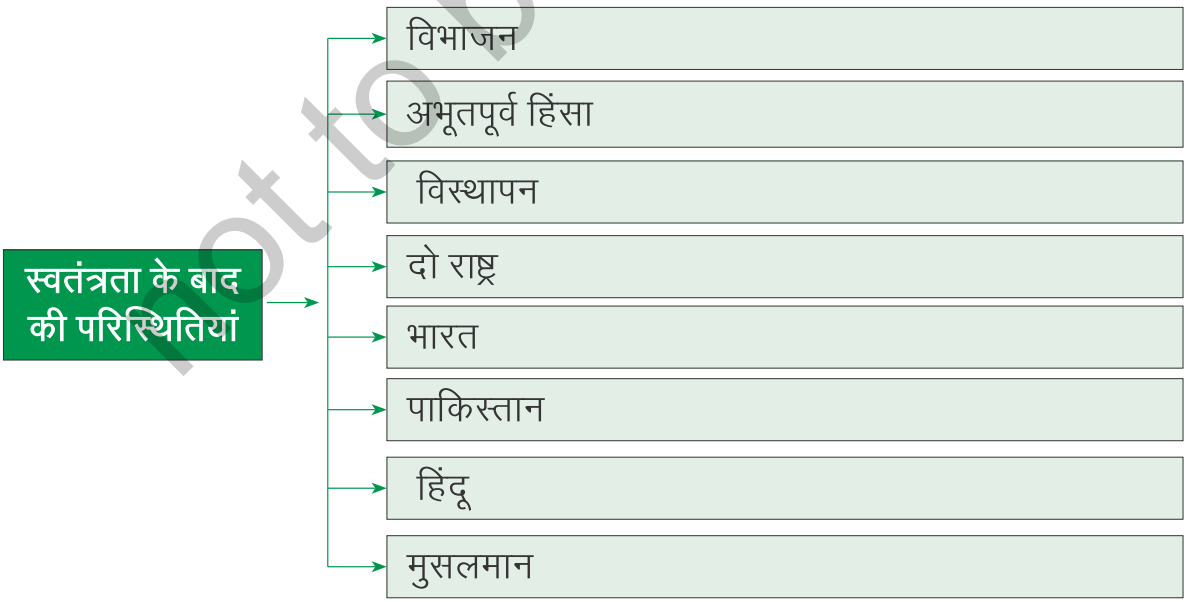

© JCERT not to be republished

विभाजन की प्रक्रिया

- धार्मिक बहुसंख्यक
- अल्पसंख्यक
- मुस्लिम बहुसंख्यक
- हिंदू बहुसंख्यक
- पाकिस्तान
- भारत
- हिंदू
- मुसलमान

मुस्लिम आबादी और विभाजन

- पश्चिमी पाकिस्तान
- पूर्वी पाकिस्तान

हर मुसलमान पाकिस्तान जाने को तैयार नहीं था। पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत के नेता खान अब्दुल गफ्फार खान द्विराष्ट्र सिद्धांत के खिलाफ थे। लेकिन विभाजन के बाद पाकिस्तान में दोनों क्षेत्र (पूर्वी पाकिस्तान तथा पश्चिमी पाकिस्तान) मिलकर एक देश का निर्माण कर रहे थे।

विभाजन के समय दोनों तरफ अल्पसंख्यक आबादी थी। भारत में मुसलमान और पाकिस्तान में हिंदू अल्पसंख्यक थे। बंटवारा एक बड़ी समस्या थी।

इन परिस्थितियों में राष्ट्र निर्माण एक बड़ी चुनौती थी।

राष्ट्र निर्माण की चुनौतियां

- भारत को एकता के सूत्र में बांधे रखना। जिसमें सभी प्रकार की विविधताओं को जगह मिले।
- लोकतंत्र को कायम रखने के लिए मौलिक अधिकार की गारंटी, मताधिकार, संसदीय शासन प्रणाली दूसरी बड़ी चुनौती थी।
- तीसरी चुनौती एक ऐसे देश का निर्माण करना था जिसमें समूचे समाज का भला हो।
- वंचित तबके एवं अल्पसंख्यक की सुरक्षा की गारंटी हो।
- लोक कल्याण के लिए नीति निर्देशक तत्व हो।

© JCERT not to be republished

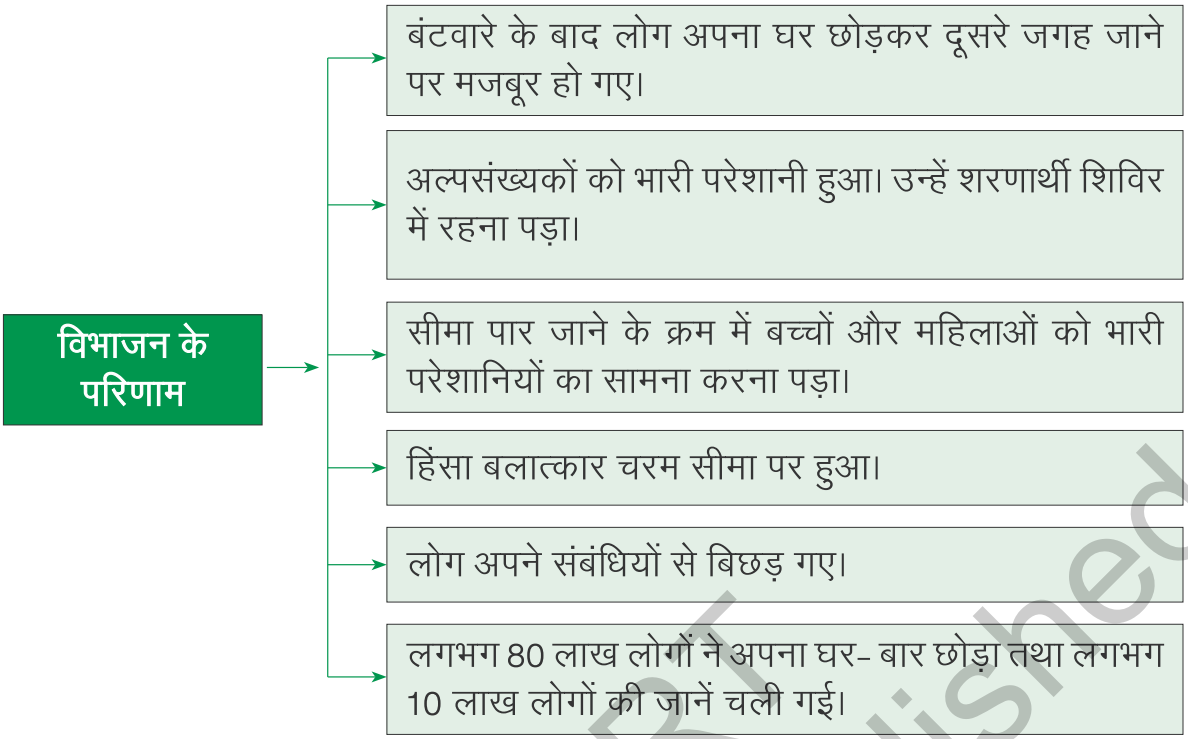

विभाजन के परिणाम

- बंटवारे के बाद लोग अपना घर छोड़कर दूसरे जगह जाने पर मजबूर हो गए।
- अल्पसंख्यकों को भारी परेशानी हुआ। उन्हें शरणार्थी शिविर में रहना पड़ा।
- सीमा पार जाने के क्रम में बच्चों और महिलाओं को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ा।
- हिंसा बलात्कार चरम सीमा पर हुआ।
- लोग अपने संबंधियों से बिछड़ गए।
- लगभग 80 लाख लोगों ने अपना घर- बार छोड़ा तथा लगभग 10 लाख लोगों की जानें चली गई।

© JCERT not to be republished

रजवाड़ों (देशी रियासत) का विलय

आजादी के पहले ब्रिटिश इंडिया दो भागों में बटी हुई थी। एक हिस्से में अंग्रेजी प्रभुत्व वाले क्षेत्र थे तो दूसरे में रजवाड़ा यानी देशी रियासत। आजादी के बाद अखंड भारत के निर्माण के लिए दोनों भागों को एक करना आवश्यक था। इसी काम को बड़ी कुशलता से तत्कालीन गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किया।

आजादी के समय लगभग 565 छोटे-बड़े देशी रियासत थे। ब्रिटिश राज की समाप्ति के बाद देशी रियासत कानूनी रूप से आजाद थे। लेकिन इन्हें स्वतंत्र भारत में शामिल करना तथा अखंड भारत का निर्माण करना एक बड़ी चुनौती थी।

भारत स्वतंत्रता अधिनियम 1947 के प्रावधान में देशी रियासत को स्वतंत्र निर्णय लेने की छूट थी

स्वतंत्रता के बाद देशी रियासत के पास तीन विकल्प

- भारत में शामिल हो जाएं।
- पाकिस्तान में शामिल हो जाएं।
- स्वतंत्र देश के रूप में अपना अस्तित्व बनाए रखें।

ब्रिटिश शासन की घोषणा से कई समस्याएं उत्पन्न हो गई। कई राज्य जैसे त्रावणकोर, हैदराबाद, भोपाल इत्यादि देशी रियासत स्वयं को स्वतंत्र देश स्थापित करने की मंशा रखते थे, जो अखंड भारत के निर्माण में बहुत बड़ी बाधा थी।

देशी रियासत को अखंड भारत में विलय करने के अनेक कदम उठाए गए।

© JCERT not to be republished

सरकार द्वारा उठाए गए कदम।

- सरकार ने कठोर कदम उठाया जिसका मुस्लिम लीग ने विरोध किया।
- शांतिपूर्ण बातचीत से लगभग सभी देशी रियासत 15 अगस्त 1947 से पहले ही भारत में शामिल हो गए थे।
- देशी रियासतों को भारतीय संघ में शामिल होने के लिए एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर कराया गया था। जिसे 'इंस्ट्रूमेंट ऑफ एकसेशन' कहा गया।
- कुछ बड़े देशी रियासत जैसे हैदराबाद, जूनागढ़ और कश्मीर ने भारतीय संघ में शामिल होने से इनकार कर दिया।

भारत में हैदराबाद रियासत का विलय

- हैदराबाद रियासत का विलय।
- हैदराबाद एक बड़ी रियासत थी वहाँ का शासक निजाम कहलाता था।
- निजाम ने एक साल के लिए भारत के साथ समझौता किया था कि यथास्थिति बनी रहे। फिर भी भारत में शामिल करने का प्रयास जारी रहा।
- हैदराबाद की जनता निज़ाम के शासन से परेशान थी। इसलिए निजाम के शासन के खिलाफ हैदराबाद में आंदोलन शुरू हो गया।
- महिलाएं निज़ाम के शासन में सबसे ज्यादा जुल्म का शिकार हुए।
- आंदोलन को दबाने के लिए निजाम ने अर्द्धसैनिक बल के रूप में रजाकारों को नियुक्त किया था। रजाकारों ने गैर मुसलमानों को अपना निशाना बनाया।
- पुलिस कार्रवाई "ऑपरेशन पोलो" के बाद निजाम ने आत्मसमर्पण कर दिया और हैदराबाद का भारत में विलय हो गया।

© JCERT not to be republished

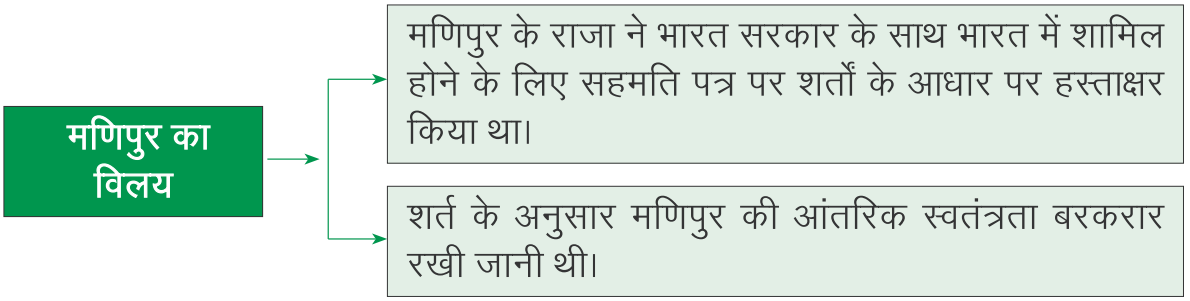

मणिपुर का विलय

- मणिपुर के राजा ने भारत सरकार के साथ भारत में शामिल होने के लिए सहमति पत्र पर शर्तों के आधार पर हस्ताक्षर किया था।
- शर्त के अनुसार मणिपुर की आंतरिक स्वतंत्रता बरकरार रखी जानी थी।

मुख्य बिंदु

- सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्म 1875 ईस्वी में तथा मृत्यु 1950 ईस्वी में हुआ था।
- पंजाबी कवयित्री एवं कथाकार अमृता प्रीतम का जन्म 1919 में तथा मृत्यु 2005 ईस्वी में हुआ था।
- गांधी जी की हत्या 30 जनवरी 1948 ईस्वी को नाथूराम गोडसे ने किया था।
- 1960 में महाराष्ट्र से अलग होकर गुजरात एक राज्य बना।
- 1966 ईस्वी में पंजाब से अलग होकर हरियाणा एक अलग राज्य बना।
- असम से अलग होकर 1972 ईसवी में मेघालय एक नया राज्य बना।
- 1987 ईस्वी में मिजोरम और अरुणाचल प्रदेश नए राज्य बने।
- 2000 ईस्वी में छत्तीसगढ़, उत्तराखंड और झारखंड 3 नए राज्य बने।
- 2014 ईस्वी को आंध्र प्रदेश से अलग तलंगाना राज्य बना।

© JCERT not to be republished

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. राज पुनर्गठन आयोग कब बना?

a. 1953 b. 1950

c. 1960 d. 1970

प्रश्न 2. भाषा के आधार पर पहला राज्य कौन बना?

a. तमिल नाडु b. आंध्र प्रदेश

c. पंजाब d. हरियाणा

प्रश्न 3. राज पुनर्गठन आयोग बनाने के बाद कुल कितने प्रांत बन?

a. 12 b. 14

c. 16 d. 18

प्रश्न 4. झारखंड राज्य कब अस्तित्व में आया?

a. 2000 b. 2010

c. 2020 d. 2015

प्रश्न 5. किस व्यक्ति की मृत्यु 56 दिन के भूख हड़ताल के बाद हुई?

a. महात्मा गांध

b. जवाहरलाल नेहरू

c. सरदार वल्लभभाई पटेल

d. पोट्टी श्रीरामलू

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. राष्ट्र निर्माण की तीन चुनौतियां कौन कौन थी?

प्रश्न 2 देशी रियासत के संबंध में भारत शासन अधिनियम में क्या प्रावधान था?

प्रश्न 3. राज पुनर्गठन आयोग के बारे में लिखें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भाषा के आधार पर राज्य निर्माण पर एक निबंध लिखें।

प्रश्न 2. भारत संघ निर्माण में सरदार वल्लभ भाई पटेल की क्या भूमिका रही?

© JCERT not to be republished